Answers to RHB/Set-3

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (ख) आस-पास के लोगों का अनुसरण करना

(*ii*) (ग) साहसी पुरुष से

(*iii*) (ख) कथन और निष्कर्ष दोनों सही हैं।

(*iv*) साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी इसलिए होती है क्योंकि ऐसी ज़िंदगी बिल्कुल निडर और बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य कभी भी यह चिंता नहीं करता कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

(*v*) साहसी व्यक्ति हमेशा स्वयं के बनाए मार्ग का चयन करता है। वह अकेला होने पर भी अपने ही विचारों में मग्न रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने उद्देश्य की तुलना कभी किसी से नहीं करता।

2. (*i*) (क) स्वयं को कार्य में पूर्ण रूप से तल्लीन कर देता है।

(*ii*) (क) कथन (A) सही है, कारण (R) गलत है।

(*iii*) (ख) ताले की कुंजी को अपने पास रखना होगा।

(*iv*) 'बिना परिश्रम किए तिलों से तेल प्राप्त नहीं किया जा सकता।' ऐसा कथन यह दर्शाता है कि जीवन में केवल परिश्रम का ही महत्व है। केवल निरंतर कठिन परिश्रम के बल पर ही कार्य में सफलता प्राप्त की जा सकती है। परिश्रम के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकता।

(*v*) जीवन में घोर विपत्ति या दुख आने पर मनुष्य को व्याकुल व निराश न होकर तुरंत अपने काम में लग जाना चाहिए। स्वयं को किसी कार्य में लगा देने पर वास्तविक शांति की अनुभूति और नए प्रकाश की प्राप्ति होती है।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) संयोग से कटा हुआ कनकौआ– संज्ञा पदबंध

(*ii*) सर्वनाम पदबंध

(*iii*) जिस वाक्य में पद-समूह क्रिया की विशेषता बताने के लिए प्रयुक्त होता है।
उदाहरण– सुभाष बाबू बहुत जोरों से वंदे मातरम् बोलते थे। इस वाक्य में 'बहुत जोरों से' पद क्रिया की विशेषता बता रहा है।

(*iv*) क्रिया पदबंध– लड़ रहा था
उदाहरण– निर्भीक एवं साहसी वज़ीर अली अपने अधिकार के लिए लड़ रहा था।

(*v*) शांत, सभ्य और भोला– विशेषण पदबंध
कारण– यह पद संज्ञा की विशेषता बता रहा है।

4. (*i*) मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है और अन्य उपवाक्य उस पर आश्रित होते हैं। योजक शब्दों 'कि', 'तो', 'जैसे', 'वैसे' आदि द्वारा ये उपवाक्य आपस में जुड़े होते हैं।

(*ii*) सरल वाक्य– लेखक के घर में कदम रखते ही भाई साहब ने डाँटना आरंभ कर दिया।
मिश्रित वाक्य– जैसे ही लेखक ने घर में कदम रखा वैसे ही बड़े भाई साहब ने डाँटना आरंभ कर दिया।

(*iii*) मिश्र वाक्य

(*iv*) सवार कर्नल से बात करके खेमे के बाहर चला गया।

(*v*) मिश्र वाक्य– 'जो' वाक्य में प्रयुक्त होने से पहले आधार वाक्य पर दूसरा वाक्य आधारित है।

5. (*i*) कनक रूपी लता– कर्मधारय समास

(*ii*) 'सत्य-असत्य' में दोनों पद प्रधान हैं। द्वंद्व समास में पूर्व पद और उत्तर पद दोनों पद प्रधान होते हैं।

(*iii*) बहुव्रीहि समास में दोनों पदों पूर्व पद और उत्तर पद में से कोई भी पद प्रधान न होकर किसी अन्य विशेष अर्थ की प्रधानता होती है। जैसे– दशानन– दश आनन (मुख) हैं जिसके अर्थात् रावण

(*iv*) जीवन भर- अव्ययीभाव समास

(*v*) तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है। उत्तर पद से ही अर्थ का पता चलता है।
उदारहण– गगनचुंबी– गगन को चूमने वाला

6. (*i*) तताँरा के विरोध में गाँव के लोग भी आवाज़ उठाने लगे।

(*ii*) दीवार खड़ी कर

(*iii*) खाल खींच

(*iv*) 'सुध-बुध खोना'– मीरा के मधुर भजन सुनकर सभी लोग अपनी सुध-बुध खो बैठते हैं।

(*v*) अपना राग अलापना– अर्थात अपनी ही बात कहते रहना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना– अर्थात सबसे अलग रहना

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (ख) छोटे भाई के लिए

(*ii*) (ख) बड़े भाई का

(*iii*) (ख) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं।

(*iv*) (घ) स्नेह व रोष से मिले हुए शब्दों से

(*v*) (क) अपना अपराध स्वीकार करने की ओर

8. (*i*) 26 जनवरी, 1931 का दिन कलकत्तावासियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिन था। सन् 1930 में गुलाम भारत में जब पहली बार स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था, तब कलकत्तावासियों के द्वारा कुछ खास तैयारियाँ नहीं की गई थीं। इसके लिए कलकत्तावासियों पर यह कलंक भी लग गया था कि उनके द्वारा आज़ादी के लिए कोई कार्य नहीं किया जा रहा। 26 जनवरी, 1931 को स्वतंत्रता दिवस की पुनरावृत्ति थी जिसके लिए पहले से ही काफी तैयारियाँ की गई थीं। इसके लिए सभी लोगों ने अपने-अपने मकानों पर व सार्वजनिक स्थानों पर झंडा फहराया था और कई मकान तो ऐसे सुंदर सजाए गए थे कि ऐसा मालूम होता था, मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। ऐसा करके कलकत्तावासी यह संदेश देना चाहते थे कि उन्हें भी स्वतंत्रता दिवस की खुशियाँ मनानी आती हैं। पिछले वर्ष के आयोजन में उनकी भागीदारी की जो कमी थी वे उसी को पूरा करना चाहते थे।

(*ii*) शैलेंद्र एक भावुक और संवेदनशील फ़िल्म निर्माता थे। उनके अंदर अपार धन-संपत्ति और यश से अधिक आत्मसंतुष्टि की अभिलाषा थी। उन्होंने अन्य फ़िल्मों की तरह दुखों को ग्लोरीफ़ाई करके नहीं दिखाया क्योंकि वे दर्शकों के भावनात्मक शोषण को उचित नहीं समझते थे। उन्होंने मानवीय दुखों को जीवन के सापेक्ष रूप में प्रस्तुत किया। फिल्म निर्माता के रूप में उन्होंने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया। इसीलिए शैलेंद्र ने राजकपूर जैसे स्टार को 'हीरामन' बना दिया था। हीरामन पर राजकपूर हावी नहीं हो सका और छींट की सस्ती साड़ी में लिपटी 'हीराबाई' ने वहीदा रहमान की प्रसिद्ध ऊँचाइयों को बहुत पीछे छोड़ दिया था।
शैलेंद्र ने सूक्ष्म-से-सूक्ष्म अभिनय को सरलतापूर्वक इस प्रकार से प्रस्तुत किया कि दुनिया-भर के शब्द उस भाषा की अभिव्यक्ति नहीं दे सकते। ऐसी ही सूक्ष्मताओं से स्पंदित थी फ़िल्म 'तीसरी कसम'। एक फ़िल्म निर्माता के रूप में शैलेंद्र ने सरलता, भावप्रवणता, कलात्मकता एवं गंभीरता को बहुत अधिक महत्व दिया।

(*iii*) बड़े भाई साहब का मानना है कि जीवन की सही समझ किताबी ज्ञान की अपेक्षा अनुभवरूपी ज्ञान से आती है। किताबी ज्ञान से केवल परीक्षा पास कर लेना, डिग्रियाँ प्राप्त कर लेना कोई बड़ी बात नहीं है। अधिक आवश्यक यह है कि हमारी बुद्धि का वास्तविक विकास कितना हुआ है और जीवन-मूल्यों के प्रति हम कितने जागरूक हुए हैं हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या है? यह समझना आवश्यक है। दुनिया को जानने, परखने का अनुभवरूपी ज्ञान हमें जीवन में आगे बढ़ने में बहुत मदद करता है। हमारी ज़िंदगी का अनुभव जितना सहज और व्यावहारिक होगा, हमारे लिए उतना ही लाभदायक होगा। अनुभवरूपी ज्ञान से हम हमारे जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियों में भी हर समस्या का समाधान करने में सहायक होते हैं। इसीलिए बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को समझाते हुए कहा कि असली समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है।

(*iv*) क्रोध में तताँरा ने अपनी तलवार निकाली और भरपूर शक्ति से उसे धरती में घोंप दिया। फिर उसे ताकत से खींचने लगा, जिसका यह परिणाम हुआ कि वह तलवार को खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया और जहाँ तक तलवार खिंच गई, वहीं से धरती फटती गई और द्वीप दो भागों में विभक्त हो गया।

9. (*i*) (ख) मनुष्य भले ही मरणशील है, किंतु उसकी मृत्यु सुमृत्यु होनी चाहिए।

(*ii*) (क) परोपकारी न होकर केवल स्वयं के लिए जीने वाला मनुष्य पशु-प्रवृत्ति वाला होता है।

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (घ) मनुष्य मरणशील है, यह जान लेने पर मृत्यु से भयभीत नहीं होना चाहिए।

(*v*) (घ) सच्चा मनुष्य वही है, जो परोपकार का भाव रखता है।

10. (*i*) जब किसी व्यक्ति को प्रभु वियोग का दंश सताता है तब उसकी वैसी ही दशा होती है, जैसी साँप के काट लेने पर होती है। उस दशा में कोई भी मंत्र या किसी भी प्रकार का उपाय असर नहीं करता। परमात्मा के वियोग में या तो व्यक्ति जीवित ही नही रह पाता और यदि जीवित रहता भी है तो वह सामान्य जीवन नहीं जी पाता। यह विरह ईश्वर को प्राप्त न कर पाने के कारण होता है किंतु जब ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है, तब यह विरह रूपी दंश शांत हो जाता है। अतः ईश्वर की प्राप्ति ही इसका स्थायी उपचार है।

(*ii*) कवि ने 'मनुष्यता' कविता में अनेक महापुरुषों के उदाहरणों द्वारा परोपकार के महत्व को दर्शाया है। जैसे– राजा रंतिदेव ने स्वयं भूख से व्याकुल होते हुए भी एक भूखे व्यक्ति को देखकर अपने हाथ में रखा भोजन का थाल उसे दे दिया था। ऋषि दधीचि ने वृत्रासुर नामक राक्षस के संहार हेतु अपनी अस्थियाँ दान में दे दी थीं। ठीक इसी प्रकार गंधार देश के राजा उशीनर ने कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस दान कर दिया था। दानवीर कर्ण ने भी देवराज इंद्र को अपने कवच और कुंडल दान कर दिए थे। अतः इस मरणशील शरीर के लिए मनुष्य को भयभीत नहीं होना चाहिए। सच्चा मनुष्य वही है जो परोपकार करे अर्थात् दूसरे मनुष्यों के काम आए। यही 'मनुष्यता' का वास्तविक अर्थ है।

(*iii*) पर्वतीय प्रदेश में वर्षा ऋतु का अद्भुत संयोग रोमांच और पल-पल परिवर्तित अनेक जादुई दृश्यों को उत्पन्न करता है। कविता में कवि ने वर्षा ऋतु में झरनों में आए नए जोश और सौंदर्य का मनोहारी वर्णन करते हुए कहा है कि झाग से उछाले मारते झरने, झर-झर का नाद कर रहे हैं और इससे ऐसा प्रतीत होता है मानो वे पर्वतों की उच्चता का यशोगान कर रहे हों। झरनों का स्वर रोम-रोम में नए जोश और मस्ती का संचार कर रहा है। झाग से भरे झरते हुए झरनों का पानी मोती की लड़ियों-सा सुंदर लग रहा है।

(*iv*) मीरा अपने आराध्य देव, श्रीकृष्ण जी की चाकरी अर्थात नौकरी इसलिए करना चाहती हैं, क्योंकि वे उनकी अनन्य भक्त हैं तथा उनमें उनका एकनिष्ठ विश्वास है। वे अपनी प्रेम-भक्ति की अभिव्यक्ति करने के लिए उनके लिए बाग लगवाकर प्रतिदिन सवेरे उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं और वृंदावन की कुंज गलियों में घूम-घूमकर उनकी लीलाओं का गान करना चाहती हैं, जिससे उनके तीनों भाव–भक्ति, दर्शन तथा स्मरण की पूर्ति हो सके।

11. (*i*) हरिहर काका के साथ उनके परिवार वालों का व्यवहार बदल गया था क्योंकि उन्होंने अपने जीते-जी अपनी 15 बीघे ज़मीन घरवालों के नाम करने से इनकार कर दिया था। अब घरवाले हरिहर काका को बहुत अधिक परेशान करने लगे थे। इस पारिवारिक कलह का फायदा उठाते हुए महंत ने हरिहर काका से कहा कि यहाँ कोई किसी का नहीं है सब मोह-माया है। यहाँ सभी स्वार्थी हैं। 15 बीघे ज़मीन के लालच में तुम्हारे भाइयों ने तुम्हें अपने साथ रखा हुआ है। यदि तुम यह ज़मीन ठाकुरजी के नाम लिख दोगे, तो तुम्हें बैकुंठ मिलेगा। तीनों लोकों में तुम्हारी प्रसिद्धि होगी। सभी तुम्हारा यशगान करेंगे और तुम्हारा जीवन भी सार्थक हो जाएगा।

(*ii*) इफ़्फ़न की दादी से टोपी को वह स्नेह तथा अपनापन मिला, जो उसे अपनी दादी से कभी प्राप्त नहीं हुआ। टोपी की दादी उसे सदा अपमानित करती थीं, परंतु इफ़्फ़न की दादी से उसे भरपूर प्यार और दुलार मिलता था। उसे इफ़्फ़न की दादी की भाषा भी अपनी माँ की भाषा की तरह बहुत प्यारी लगती थी। टोपी चाहता था कि इफ़्फ़न की दादी उसके घर चली आएँ और टोपी की दादी इफ़्फ़न के घर चली जाएँ।

(*iii*) लेखक ने बड़े होकर जब स्कूल अध्यापक बनने की ट्रेनिंग ली और वहाँ बाल-मनोविज्ञान का विषय पढ़ा, तब उन्हें यह बात समझ में आयी कि बच्चों को खेलना इतना अच्छा क्यों लगता है। इसके पश्चात ही वह यह जान पाया कि माता-पिता से पिटने के बाद भी बच्चे क्यों खेलने चले आते थे। उस गाँव में बहुत से ऐसे बच्चे थे,

जिन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। पढ़ाई में उनकी कोई रुचि नहीं थी, इसलिए किसी दिन अपना बस्ता वे तालाब में फेंक आए और फिर कभी स्कूल गए ही नहीं। उनके माँ-बाप ने भी उन्हें स्कूल भेजना उचित नहीं समझा क्योंकि माँ-बाप के साथ काम या व्यवसाय में लग जाना ही ऐसे बच्चों एवं उनके अभिभावकों का उद्देश्य था।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (*i*) **संघे शक्तिः कलौ युगे**

'संघे शक्तिः कलौ युगे' उक्ति का अर्थ है– कलियुग में संगठन में शक्ति है, जिससे बड़े से बड़ा पहाड़ भी किसी का रास्ता नहीं रोक सकता। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह सभी के साथ मिल-जुलकर रहना चाहता था। इस प्रकार की भावना ही घर-परिवार की नींव है। जब अनेक परिवार आपस में मिल-जुलकर प्रेमभाव से रहते हैं तब समाज का निर्माण होता है। समाज में सहयोग की भावना का होना आवश्यक है। समाज में रहते हुए हमें जीवन के हर एक मोड़ पर किसी न किसी के सहयोग की आवश्यकता ज़रूर पड़ती है। जिस कठिन कार्य को व्यक्ति अकेला करने में समर्थ नहीं हो पाता वह एकजुट होकर आसानी से किया जा सकता है। वास्तव में अकेले ज़िंदगी जीना कठिन है किंतु यदि संयुक्त रूप से जिया जाए तो जीवन का प्रत्येक कार्य आसान हो जाता है। आज कहीं न कहीं देश में संगठन शक्ति का अभाव दिखाई देता है। धर्म, जाति, भाषा, संप्रदाय आदि के नाम पर देश की एकता विघटित हो रही है। अतः समाज का हिस्सा होने के नाते हम सभी को यह समझना आवश्यक है कि संगठित रूप में होने पर हम किसी भी कठिन से कठिन परिस्थिति का सामना आसानी से कर सकते हैं, न कि एकल रूप में।

(*ii*) **भारत और चंद्रयान**

विगत कई दशकों से मानव के लिए पृथ्वी के बाद चंद्रमा सबसे अधिक शोध का प्रमुख विषय रहा है। भारत की दृष्टि में चंद्रमा के विषय में शोध एक प्रमुख तथ्यात्मक जानकारी की ओर संकेत करता है। चंद्रमा के विषय में वैज्ञानिकों के दिमाग में अनेक तरह के विचार पहले से ही पनपते रहे हैं। अपनी इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए भारत की तरफ़ से 2008 में चंद्र मिशन की शुरुआत एक सुनियोजित तरीके से की गई। विश्व की प्रमुख अंतरिक्ष रिसर्च संस्था 'नासा' ने सर्वप्रथम इस ओर अपने कदम बढ़ाए। भारत की संस्था 'इसरो' ने भी इसी प्रकार से अपने अभियान की शुरुआत की। इसे अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम के रूप में देखा जाने लगा। चंद्र-मिशन की शुरुआत 22 अक्टूबर, 2008 को हुई जब चंद्रयान-1 को लॉन्च किया गया। चंद्रयान-1 को लॉन्च किया गया। चंद्रमा के लिए 'इसरो' की पहली खोज चंद्रमा की परिक्रमा करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। चंद्रयान-1 ने लगभग 312 दिनों तक संचालन किया। इस मिशन ने अपने नियोजित उद्देश्यों का 95% लक्ष्य हासिल किया जिसमें चंद्रमा पर जल की उपस्थिति की पुष्टि व एक प्राचीन चंद्र लावा प्रवाह द्वारा निर्मित चंद्र गुफाओं का साक्ष्य शामिल है। इस मिशन के लगभग 11 वर्ष बाद 22 जुलाई, 2019 को भारत ने सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्री हरिकोटा से चंद्रयान-2 को दूसरे मिशन के रूप में लॉन्च किया। यह लूनर ऑर्बिटर लैंडर रोवर टाइप मिशन है। चंद्रमा-2 को किसी अलौकिक सतह पर उतारने का 'इसरो' का पहला प्रयास था। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य चंद्रमा पर स्थान और जल की प्रचुरता का मानचित्रण करना था। भारत चंद्रमा पर जीवन को तलाशने का हर संभव प्रयास कर रहा है। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारत ने अगला चंद्र-मिशन चंद्रयान-3 भी श्रीहरिकोटा से 23 अगस्त, 2023 को लॉन्च किया है। इन मिशनों से एक बात तो सिद्ध होती है कि भारत निरंतर अंतरिक्ष पर फतह करने की दिशा में अपने कदम मज़बूती के साथ आगे बढ़ा रहा है।

(*iii*) **नारी सम्मान**

नारी सम्मान के विषय में एक उक्ति प्राचीन समय से अत्यंत प्रसिद्ध है– 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।' अर्थात जहाँ पर नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। वैदिक काल में नारी को पुरुष

के समान अधिकार प्राप्त थे। कोई भी यज्ञ नारी के बिना संपन्न नहीं हो सकता था। वह धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती थी। इसके बाद भारत में कुछ विलासी राजाओं का आगमन होने पर उनकी बुरी दृष्टि से बचाने के लिए नारी जाति को चार दीवारी में कैद कर दिया गया। जिसने नारी जाति की स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया। उसके पश्चात धीरे-धीरे शिक्षा का विकास होने से लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव आया। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद आदि ने नारी शोषण का विरोध किया, जिससे नारी की स्थिति में बहुत अधिक सुधार हुआ। आज के समय में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ नारी अपना परचम न लहरा रही हो। चाहे वह खेल जगत हो, उद्योग जगत हो, मनोरंजन का क्षेत्र हो, राजनीति हो, सैनिक विभाग हो या शिक्षा का क्षेत्र हो। आज वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है और घर तथा बाहरी दुनिया में अपने गुणों के कारण संतुलन बनाकर चल रही है। अतः कहा जा सकता है कि आज की नारी पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे उन्नति के मार्ग पर बढ़ रही है।

13. परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 20.08.20xx
सेवा में
प्रधानाचार्य
क.ख.ग. विद्यालय,
दिल्ली

विषय : विद्यालय में नए कंप्यूटर मँगवाने के संबंध में।

महोदय

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय का दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। हमारे विद्यालय में केवल चार ही कंप्यूटर सिस्टम हैं जिनमें से केवल एक ही ठीक से चल पाता है बाकी तीन कंप्यूटरों की स्पीड बहुत कम है और अधिकतर तो वे खराब ही रहते हैं। आज के समय में कंप्यूटर की सबसे अधिक आवश्यकता पड़ती है। सभी विषयों के बारे में कोई भी जानकारी तुरंत ही मिल जाती है। कंप्यूटर के अभाव में सभी विद्यार्थियों को बहुत अधिक परिशानी का सामना करना पड़ रहा है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि कृपया कुछ नए कंप्यूटर मँगवाने की कृपा करें जिससे हम अधिक से अधिक उनका लाभ उठा सकें।

आशा करता हूँ कि आप शीघ्रातिशीघ्र हमारी इस समस्या का समाधान करेंगे। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी छात्र
तन्मय

अथवा

परीक्षा भवन
नई दिल्ली
दिनांक : 10.06.20xx
सेवा में
क्षेत्रीय विद्युत अधिकारी
दिल्ली विद्युत बोर्ड, रोहिणी
दिल्ली

विषय : क्षेत्र में हो रही बिजली चोरी के संदर्भ में।

मान्यवर

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र में हो रही बिजली चोरी की ओर दिलाना चाहता हूँ। हमारे क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने सही तरीके से बिजली के कनेक्शन नहीं लिए हुए हैं। वे चोरी से बिजली का कनेक्शन लेते हैं जिससे कि बिजली का बिल देने से बच सकें। चोरी से बिजली कनेक्शन लेकर वे पूरे घर के ए.सी. आदि सब चलाते हैं। इसके कारण जिन लोगों ने कनेक्शन लिए हुए हैं उन तक बिजली कम पावर में पहुँच पाती है। जिसके कारण बहुत अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। इससे शॉर्ट-सर्किट होने की भी बहुत अधिक संभावना होती है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप क्षेत्र में हो रही बिजली की चोरी पर विशेष ध्यान दें और हमें भी बिजली की परेशानी से मुक्ति दिलाने का कष्ट करें।

धन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

14.

केंद्रीय विद्यालय, य०र०ल० नगर

सूचना

रक्तदान शिविर का आयोजन

दिनांक : 12 नवंबर, 20xx

कक्षा दसवीं से बारहवीं तक के सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि हमारे विद्यालय द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत डॉक्टर और स्वास्थ्य संगठन के सभी सदस्य उपस्थित रहेंगे।

यह रक्तदान शिविर 15 नवंबर, 20xx को सुबह 10:00 बजे शुरु होगा। आप सभी अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हों।

धन्यवाद
सचिव, स्वास्थ्य संगठन
क.ख.ग.

अथवा

नवोदय विद्यालय, य०र०ल० नगर

सूचना

विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक : 06.05.20xx

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि विज्ञान विषय के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न चार्ट और मॉडलों के माध्यम से विज्ञान विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त हो सकेगी। अतः अधिक से अधिक विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठाएँ।

समय – प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक
दिनांक – 10.05.20xx
स्थान – विद्यालय परिसर

सचिव
क.ख.ग.

15.

शीघ्र आएँ लाभ उठाएँ

पर्वतीय स्थल मसूरी घूमने का विद्यार्थियों के लिए सुनहरा अवसर

विद्यार्थियों के लिए विशेष छूट

सिर्फ 1000 रुपये में
दो दिन के लिए आधुनिक सुख-सुविधाओं से युक्त कमरा
नाश्ता, लंच और डिनर साथ में

बस का किराया मात्र ₹ 300

संपर्क करें : 9230XXXXXX

अथवा

शीघ्र आएँ शीघ्र पाएँ

दिव्या पुस्तक भंडार

प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित पुस्तकों पर भारी छूट

पुरानी पुस्तकों पर 50% की छूट

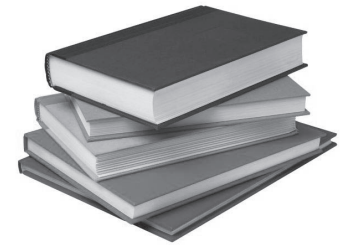

नयी करेंट अफेयर्स की किताबों पर 20% तक की छूट

संपर्क करें : 8270XXXXXX

16. मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसे ही उसे परिणाम भोगने पड़ते हैं। यदि अच्छे कर्म करता है तो उनका परिणाम हमेशा अच्छा होता है और यदि बुरे कर्म करता है तो उनका परिणाम बुरा होता है। किसी शहर में धनीराम नाम का एक बड़ा उद्योगपति था। उसका दवाइयों का बड़ा कारखाना था। वह दिनोंदिन बहुत तरक्की कर रहा था। अब उसके पास सारी सुख-सुविधाएँ थीं। ऐसा देखा जाता है कि बढ़ते हुए धन के साथ-साथ व्यक्ति का लालच भी बढ़ता जाता है। धनीराम के दो बेटे थे। अब उसकी इच्छा हुई कि उसके दोनों बेटों के लिए अलग-अलग बड़े कारखाने होने

चाहिए। इसी लालच के चलते धनीराम ने और अधिक धन कमाने के लिए नकली दवाई बनाने के बारे में सोचा। आरंभ में तो कम गड़बड़ी के साथ दवाइयाँ बनाई गईं। बाद में बड़े व्यापक स्तर पर दवाइयों में गड़बड़ी शुरू कर दी गई और खुलेआम दवाइयाँ बिकने लगीं। अब धनीराम के कारखाने में काम करने वाले किसी व्यक्ति ने ही उसकी शिकायत जाँच अधिकारी से कर दी। धनीराम की आमदनी दिनोंदिन और बढ़ती जा रही थी। उसने दोनों पुत्रों के लिए एक-एक कारखाना बनवा दिया। एक दिन अचानक धनीराम के छोटे बेटे की तबीयत बहुत अधिक खराब हो गई। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। आधी रात के समय एक विशेष दवा की आवश्यकता पड़ी। वह केवल एक ही औषधालय पर उपलब्ध होने के कारण खरीद ली गई। किंतु जैसे ही इंजेक्शन के द्वारा वह दवाई धनीराम के छोटे बेटे के शरीर में अंदर पहुँची, उसका पूरा शरीर नीला पड़ गया। इससे पहले कि डॉक्टर कुछ कह पाते धनीराम के छोटे बेटे की मृत्यु हो गई। अब धनीराम की नकली दवाइयों के कारोबार का भांडा फूट चुका था। धनीराम बेटे की मृत्यु से इतना टूट चुका था कि वह अपने बचाव के लिए भी कोई कोशिश नहीं कर पाया। उसने जेल में रहकर अपने बुरे कर्मों का प्रायश्चित करना ही ठीक समझा। इसीलिए कहते हैं कि जो जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है।

शिक्षा– मनुष्य को हमेशा अच्छे कर्म करने चाहिए

अथवा

प्रेषक – abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता – pqr@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी) – xyz@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) – rst@gmail.com

विषय : बैंक से लोन लेने के संबंध में।

महोदय

सहृदय

सविनय मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मैं किसी प्रतिष्ठित संस्थान से दो वर्षीय एम.बी.ए. करना चाहता हूँ। उस संस्थान की फीस अधिक होने के कारण मैं पूरी फीस एक साथ देने में समर्थ नहीं हो पाऊँगा। इसलिए मैं आपके बैंक से 5 लाख रुपये का एजुकेशन लोन लेना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे इस विषय में संपूर्ण जानकारी प्रदान करने की कृपा करें कि मुझे लोन कैसे मिलेगा और 5 लाख रुपये पर कितना ब्याज लगेगा।

निवेदन है आप जल्द से जल्द जानकारी देने की कृपा करें।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

सधन्यवाद

भवदीय

मोहित